

प्र. "द्वितीयशत की कला और वास्तुकला के विकास में कलचुरी वंश का ऐतिहासिक महत्व पर चर्चा करें।"

द्वितीयशत में कलचुरी राजवंश ने ईस्वी से ईस्वी तक शासन किया, जिसकी शुरुआत कर्निंगराज ने तुम्मन को राजधानी बनाकर की थी। रत्नपुर को राजधानी बनाया गया, और फिर बाद में रायपुर राज्या भी बनी।

कलचुरियों के शासनकाल में द्वितीयशत में कला, वास्तुकला और संस्कृति का विकास हुआ, जिसके बाद मराठों के हस्तक्षेप के कारण उनका शासन समाप्त हो गया।  
कला और संस्कृति पर प्रभाव :-

• वास्तुकला :- कई स्मारकों और मंदिरों का निर्माण किरायाजो कि नागर और द्रविड़ शैलियों के मिश्रण को दर्शाती है। उदाहरण - रत्नपुर का महामाया मंदिर, - कवर्धा का भोरमदेव मंदिर।

• मूर्तिकला :- इस काल में उत्कृष्ट मूर्तियों का निर्माण हुआ जो विभिन्न देवी, देवताओं, पौराणिक पात्रों और रामायण व महाभारत के पात्रों को दर्शाती है।

• साहित्य :- कलचुरी शासकों ने संस्कृत विद्वानों और कवियों को संरक्षण दिया।

- उनके शासनकाल में धार्मिक ग्रंथों, दार्शनिक ग्रंथों और काव्य रचनाओं सहित कई महत्वपूर्ण साहित्यिक कृतियाँ रची गईं।

• धार्मिक समन्तगतता :- कलचुरी मुख्यतः शैव थे, उन्होंने वेष्णव



प्र. "दत्तीसगढ़ की कला और वास्तुकला के विकास में कलचुरी वंश का ऐतिहासिक महत्व पर चर्चा करें।"

दत्तीसगढ़ में कलचुरी राजवंश ने ईस्वी से ईस्वी तक शासन किया, जिसकी शुरुआत कलिंगराज ने तुम्मन को राजधानी बनाकर की थी। शतपुर को राजधानी बनाया गया, और फिर बाद में रायपुर शाखा भी बनी।

कलचुरियों के शासनकाल में दत्तीसगढ़ में कला, वास्तुकला और संस्कृति का विकास हुआ, जिसके बाद मराठों के हस्तक्षेप के कारण उनका शासन समाप्त हो गया।  
कला और संस्कृति पर प्रभाव :-

• वास्तुकला :- कई स्मारकों और मंदिरों का निर्माण किराया जो कि नागर और द्रविड़ शैलियों के मिश्रण को दर्शाती है। उदाहरण - शतपुर का महामाया मंदिर, - कवर्धा का भोरमदेव मंदिर।

• मूर्तिकला :- इस काल में उत्कृष्ट मूर्तियों का निर्माण हुआ जो विभिन्न देवी, देवताओं, पौराणिक पक्षों और रामायण व महाभारत के दृश्यों को दर्शाती है।

• साहित्य :- कलचुरी शासकों ने संस्कृत विद्वानों और कवियों को संरक्षण दिया।

- उनके शासनकाल में धार्मिक ग्रंथों, दार्शनिक ग्रंथों और काव्य रचनाओं सहित कई महत्वपूर्ण साहित्यिक कृतियाँ रची गईं।

• धार्मिक समन्वयवाद :- कलचुरी मुख्यतः शैव थे, उन्होंने वैष्णव



और जैन जैसे अन्य धार्मिक संप्रदायों के प्रति भी सहिष्णुता दिखाई ।

- स्थापत्य विरासत में उत्तराधिकार :- दल्लीसगढ़ में उनकी स्थापत्य कला आज भी संरक्षित है- जैसे कि अमरकंटक, रतनपुर, दैतुर्गढ़ और माल्हार और वे पर्यटन व धार्मिक स्थल के रूप में प्रासंगिक बने हुए हैं ।

सारांश :- कलचुरी वंश ने दल्लीसगढ़ के कला, स्थापत्य व सांस्कृतिक विकास में गहरा योगदान दिया है । वे न केवल शासक थे पंशु कलाकारों और विद्वानों के प्रेरक भी रहे । उनके द्वारा निर्मित मंदिरों की स्थापत्य शैली, मूर्तिकला की सूक्ष्मता, धार्मिक सहिष्णुता और संस्कृत साहित्य को बढ़ावा देने में क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को समृद्ध और अद्वितीय बनाया । इनका प्रभाव आज भी दल्लीसगढ़ की स्थापत्य और कला पर दृढ़ता से विद्यमान है, जो उन्हें शासक अतीत से जोड़ता है ।